

3.3.3 (2016-17)

34-@

सैद्धान्तिकी

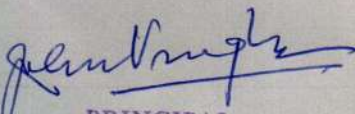
समय-समाज के संदर्भों की शोध-पत्रिका

संपादक

डॉ. वज कुमार पाण्डेय
डॉ. दीपक कुमार राय

अलका पब्लिकेशन्स

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1
दिल्ली-110091


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



वर्ष : 9 अंक : 3 □ जुलाई-सितम्बर, 2016

सैद्धान्तिकी

सैद्धान्तिकी भारत में समाचार पत्रों के निबंधक (आर.एन.आई.) द्वारा अनुमोदित है।

संरक्षक:	डॉ० नवल किशोर डॉ० पी. एन. सिंह डॉ० एस. त्रिपाठी
परामर्श:	डॉ० गिरीश मिश्र डॉ० आर. एन. कुमार डॉ० जी. पी. ओझा
संपादक मंडल:	डॉ० शशिकांत राय डॉ० कृष्ण कुमार सिंह डॉ० अनिल कुमार सिंह डॉ० अमर कान्त सिंह
प्रबंध संपादक:	डॉ० साद बिन हामिद
साज-सज्जा :	पंकज कुमार झा

संपादकीय सम्पर्क:

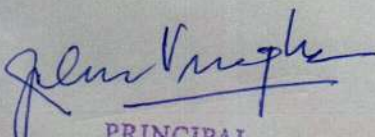
448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1,
दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 47541851
e-mail : editorialindia@gmail.com

मूल्य : ₹ 1500.00

मुद्रक एवं प्रकाशक शैलेन्द्र सेंगर द्वारा 448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091 से प्रकाशित तथा शिव शक्ति प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा दिल्ली-32 से मुद्रित

नोट :

पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



इस अंक में

गृह विज्ञान

बाल अपराध के कारकों एवं उनके उपचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन-डॉ० अलका पचायती राज में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका-डॉ० रश्मि कुमारी	7 15
भारत सरकार को स्वास्थ्य के सन्दर्भ में नीति एवं कार्यक्रम-श्वेता कांता	25

पत्रकारिता

आपातकाल की भूमिगत पत्रकारिता-डॉ० अरूण कुमार भगत	47
भारत में समाचार पत्रों की वर्तमान प्रवृत्तियाँ-अश्विनी कुमार	57

इतिहास

हड़प्पाई धर्म-प्रो० सिंह सारसर	69
असहयोग आन्दोलनोपरान्त 1930 तक चम्पारण में गांधी प्रभाव की निरंतरता-कुमारी नीतू	73
मुंडा जनजाति और समावेशी विकास: मुंडा महिलाओं के विशेष संदर्भ में-श्रीमन नारायण पाठक	78
और गाँधीजी बोल उठे - 'चम्पारण की लड़ाई फतह हो गई!'-विनीता कुमारी	84
भारत-बर्मा संबंध (1900-1923)-इन्द्रकान्त	89
डॉ० लोहिया का आर्थिक दर्शन: एक दृष्टि में-मनोरंजन कुमार 'मयंक'	93

हिन्दी

मनीषी कथाकार व्यक्तित्व: आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री-डॉ० नीलम कुमारी	96
---	----

राजनीति विज्ञान

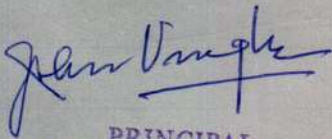
सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005: एक समीक्षा-सुनील कुमार	99
ब्रिटिश भारत में छापखाना (प्रेस) एवं इसका प्रभाव-कुमारी रीना	105
वैश्वीकरण की राजनीति और भारत-अंजनी कुमार घोष	108

संस्कृत

महाकवि भवभूति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-डॉ० प्रसून दत्त सिंह	114
हमारे संस्कृति में संस्कार-मनीष कुमार भारती	118
काशी का धार्मिक जीवन-डॉ० कुमारी नूतन	120

संसाधिका

(4) जुलाई-सितम्बर, 2016

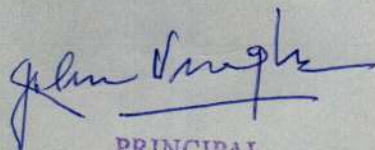

 PRINCIPAL
 ST. STEPHEN'S COLLEGE
 DELHI-110007



द्वैत वेदान्त में प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप-डॉ० भक्त बत्सल	122
श्रीहरिनामामृत व्याकरण में वर्णित संज्ञाओं का वैशिष्ट्य-चित्रा भारद्वाज	129
वैदिकसाहित्ये विवाहसंस्कारस्य वैशिष्ट्यम्-डॉ० शम्भू कुमार पाण्डेय	134
श्रीदयानन्दचरितमहाकाव्य में निरूपित जीवनदर्शन-डॉ० चन्द्र भूषण झा	138
मैथिली	
आलोचना आ साहित्यवृद्धि: विश्लेषणात्मक अध्ययन-सरोज कुमार	144
दर्शनशास्त्र	
राजा राममोहन राय के सामाजिक-पुनर्जागरण की दार्शनिकता-सुमन कुमारी	147
शिक्षाशास्त्र/मनोविज्ञान	
उच्च माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं के छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन-अलका कुमारी; डॉ० अनिता शर्मा	150
पी.एच.डी.	
प्रेसमड (मैली) से बनी जैविक खाद का जनपद मुजफ्फरनगर के कृषि क्षेत्र में योगदान-डॉ० रश्मि तायल	156
गांधी विचार	
खादी से आर्थिक स्वावलम्बन: गांधी जी के विचारों के संदर्भ में-अक्षय कुमार	165
COMMERCE	
Management of Microfinance for Rural Development in India: A Review - Dr. Dilip Kumar Sahu	169
Reforms in Indian Capital Markets - Dr. Lakshman Singh	174
Impact of T.V Advertisements on Buying Pattern of Adolescent Girls - Bhawya Sachdeva Mukhi	179
ECONOMICS	
FDI in the Field of Promoting Information Technology and Communication - Dr. Rakesh Kumar	185
EDUCATION	
The Girl Child Education: Policies and Problems - Shazia Fatma	188

(5)/बुलाई-सितम्बर, 2016

सैखान्तिकी



PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



ENGLISH

- Wordsworth and Coleridge: A Comparative Study—*Dr. Arun Kumar* 193
 Feminism and Shashi Deshpande's Feminism—*Dr. Ranjit Kumar* 198
 Wordsworth and His Predecessors—*Mayank Ranjan* 203

LAW

- Company Act, 2013 is a New Wine in a Small Bottle:
 A Study—*Anjay Kumar* 210

GEOGRAPHY

- Impact of Agriculture Development on Water Resources
 —*Om Prakash and Dr. Shiv Raj Singh Tomar* 219

PSYCHOLOGY

- Educational Achievement and Family Environment
 —*Dr. Lakshmeshwar Thakur, Smt. Rashmi* 226

ARABIC

- Development of Arabic Fiction during Twenty Century—*Farida Parbin* 230

HOME SCIENCE

- Impact of Mal Nutrition on the Health of Child Labour:
 An Analysis—*Sushma Kumari* 237

HISTORY

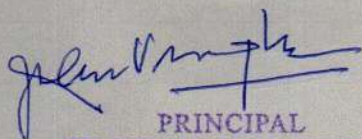
- Themes in Early Medieval India: An Analysis of The Whole Era
 —*Manisha Malik* 245

JOURNALISM

- Future of Print Journalism in the Time of Mobile and Internet
 —*Tej Narayan Ram* 255

 सैद्धान्तिकी

(6) जुलाई-सितम्बर, 2016



PRINCIPAL
 ST. STEPHEN'S COLLEGE
 DELHI-110007



श्रीदयानन्दचरितमहाकाव्य में निरूपित जीवनदर्शन

डॉ. चन्द्र भूषण झा

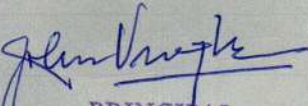
संस्कृत विभाग, सेण्ट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

स्वामी दयानन्द अद्भुत समाजोद्धारक, वैदिक धर्म के अटल प्रचारक, असत्य-निवारक और सत्य-संरक्षक थे। सौभाग्य से उन्होंने अपने शैशव में ही सत्य का चरण किया था। भौतिक पदार्थों को अनित्य समझ उनमें उदासीन बुद्धि उत्पन्न की थी। उनकी तीव्र मेधा, विलक्षण व्युत्पत्ति, तीक्ष्णतम तर्कशक्ति की तद्युगीन मनोषियों ने भूरिशः प्रशंसा की थी। जीवलोक के समस्त जीव के प्रति उनके अन्तस्तल में करुणा और अनुकम्पा का अतल महार्णव हिलोरे मारता था। भारतीयता बलवती होकर उनके हृदय में विश्राम करती थी। श्रुतियों से निस्स्यंदित आह्लादक पीयूष-पान में उनका मन रमता था। दम्भ, कपट, छल और पाखण्ड की तमिस्रा के तितोधान हेतु देदीप्यमान ज्योतिर्मय बालारुण की भाँति जगतीतल में उनका आविर्भाव हुआ था।

ऐसे वन्द्य, अभिनन्द्य, अनवद्य चरित्र को केन्द्र में रखकर सुरगवी के कतिपय समुपासकों ने अपनी जिज्ञा, लेखनी और जीवन को कृतार्थ किया है। सर्वप्रथम आचार्य अखिलानन्द शर्मा ने "दयानन्ददिग्विजयम्" नामक महाकाव्य रचकर सरस्वती-पुत्रों के कर-कमलों में अपना सारस्वतोपायन समर्पित किया था। तदनन्तर, आचार्य मेधाव्रत का "दयानन्ददिग्विजयम्" महाकाव्य, पातञ्जल महाभाष्य के ममज्ञ आचार्य विद्यानिधि शास्त्री का "दयानन्दचरितम्" गद्यकाव्य, आचार्य दिलीप दत्त उपाध्याय का "मुनिचरितामृतम्", आचार्य धर्मवीर शास्त्री का "महर्षिमात्स्यार्पणम्" प्रभृति कृतियाँ सुधीजनों के इक्षुध में अवतरित हुईं। इस शृंखला का स्वर्ण-कलश प्रातः स्मरणीय आचार्य रमाकान्त उपाध्याय जी के "श्रीदयानन्दचरितमहाकाव्यम्" के रूप में 2006 ई. में प्रकट हुआ। परमपिता परमेश्वर की लोला अपरम्पार है। श्रद्धेय कवितल्लज, आचार्य रमाकान्त जी उपाध्याय के शिव-सायुज्य के पैतृस-छत्तीस वर्षों के पश्चात् उनको मानसी दुष्टि के प्रकाशन का सुयोग बन पाया जिसका संकेत ग्रन्थ के स्वनामधन्य सम्पादक, दुर्धर्ष मनीषी, संस्कृत नभोमंडल के भास्वर अंशुमाली, कवि-हृदय, सहृदय, कवि-पुत्र प्रो. वाचस्पति उपाध्याय जी ने पुस्तकारंभ में प्रस्तुत अपने 'नैवेद्यम्' में "तेषां जीवनकाले इदं प्रकाशितं नाभूदिति क्षणमपि विचिन्त्य नितरां मे सौदति चेतः" कह कर दिया है। अस्तु, 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माषः क्व च भारविः' की सुक्ति सार्थक हुई। जब यह ग्रन्थ पाण्डुलिपि-स्वरूप में संरक्षित था तभी संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य समीक्षक आचार्य रमेश चन्द्र शुक्ल जी ने "अर्वाचीन-संस्कृतम्" में लिखा था - "दयानन्दचरित नामक महाकाव्य जिस परम मधुर सुबोध भाषा से अलंकृत है तथा जिस सुन्दर शैली में काव्य-सौन्दर्य को प्रस्तुत करता है, यह उनका अपना अपूर्व वैलक्षण्य है। दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य भी इन्हीं गुणों से युक्त है। परन्तु अन्तर इतना है कि दिग्विजयम् तो यत्र-तत्र है, परन्तु चरितम् सर्वत्र है।" बीस सर्गों में समुपनिबद्ध लगभग द्विसहस्र पद्य परिमाण वाला

सैखान्तिकी

(138)/जुलाई-सितम्बर, 2016


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



35 - (a)

मतादर्श

सांसाजक वलडान. मानवकी एवं वाणलज्य की शोध पत्रलव

संपादक

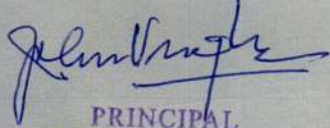
शैलेन्दु सेंगर

नलदेशक, एकेडमी ऑफ एडमलनलस्ट्रेटलव सर्वलसेज, दललुी

मेखला प्रकाशन

एफ-3/139, सेक्टर-16, रोहलणी

दललुी-110089


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



357 (2)

वर्ष : 10 अंक : 1 □ जनवरी-मार्च, 2017

मतादर्श

मतादर्श भारत में समाचार पत्रों के निबंधक (आर.एन.आई.) द्वारा अनुमोदित है।

सलाहकार संपादक
डॉ० गिरीश मिश्र

संपादक
शैलेन्द्र सेगर

संपादक मंडल
डॉ० आर. एन. कुंअर
डॉ० रामेश्वर सिंह
डॉ० विद्या भूषण श्रीवास्तव
डॉ० रवीन्द्रनाथ राय
डॉ० अमरकान्त सिंह
डॉ० लक्ष्मेश्वर ठाकुर

साज-सज्जा
पंकज झा

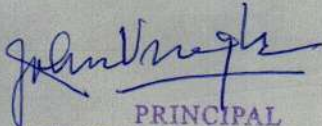
संपादकीय सम्पर्क:
448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1,
दिल्ली-110091

फोन : 011-22753916, 47541851, 64683387
e-mail : editorialindia@gmail.com

मूल्य : ₹ 1500.00

मुद्रक एवं प्रकाशक अलका सिंह द्वारा एफ-3/139, सेक्टर-16, रोहिणी दिल्ली-110089 से प्रकाशित तथा बी. कं. ऑफसेट, नवीन शाहदरा दिल्ली-32 से मुद्रित

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों का विचार अपने ही। इसमें लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं उद्देश्य जो सज्जा। पत्रिका में सम्बंधित किसी भी विवाद को निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



इस अंक में

मैथिली

मैथिली लोक-साहित्य: एक अध्ययन-डॉ० हीरा मंडल

7

हिन्दी

समर्पण-डॉ० रेणु कुमारी

11

उषा प्रियंवदा की कहानियों में व्यक्त कथा संवेदना का मनोविश्लेषण-संगीता शर्मा

14

"आनन्द का प्रकाश" भारतीय संस्कृति के परिपेक्ष्य में-डॉ० सुभद्रा झा

21

हिन्दी कविता में समसामयिक बोध-डॉ० अलका प्रकाश

24

स्त्री-विमर्श की पाश्चात्य अवधारणा-डॉ० रंजना कुमारी

27

दर्शनशास्त्र

काट के नैतिक दर्शन में नैतिक आदेश और शुभ संकल्प की सम्बद्धता
-संजीव कुमार सुधान्यु

32

समाजिक न्याय की अवधारणा-स्नेहलता

35

राजनीति विज्ञान

पूर्णिया जिले में बीस सूत्री कार्यक्रम कार्यान्वयन में सरकार की नीति एवं परिणाम
-मो. नौराद

40

संवैधानिक उपबंध और नारी सशक्तिकरण के बढ़ते कदम-स्मृति कुमारी

44

मोदी सरकार की विदेश नीति के विविध आयाम-क्रांति प्रकाश

50

इतिहास

औपनिवेशिक भारत में महिला-कानूनों की पृष्ठभूमि-राजेश कुमार प्रज्जवल

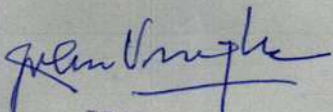
56

मौर्योत्तर काल में जातियों का विकास-सुबोध कुमार गुप्ता

61

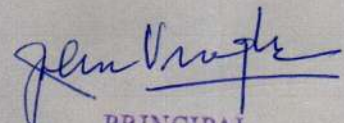
गतादर्श

(4)/जनवरी-मार्च, 2017


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



जैन धर्म तथा बौद्ध धर्मों के सामाजिक आयाम: एक ऐतिहासिक अध्ययन - संदीप कुमार	64
प्राचीन भारतीय समाज एवं शूद्र-डॉ० अमरकांत सिंह	70
पत्रकारिता	
पत्रिकाओं के लेआउट एवं डिजाइन के सैद्धांतिक आयामों का अध्ययन - अश्विनी कुमार	73
संस्कृत	
संस्कृत साहित्य में तन्त्र साधना-डॉ० भक्त वत्सल	79
वैदिक साहित्य में नारी-डॉ० कुमारी नूतन	83
अथर्ववेद और अग्निपुराण में गौसरक्षण एवं गौचिकित्साविज्ञान-डॉ० शम्भू कुमार पाण्डेय	89
आचार्यदण्डिनो विश्वतचरिते कलानिरूपणम्-डॉ० चन्द्रभूषणशा:	94
मेघदूत में वर्णित भारतवर्ष का तत्कालीन भौगोलिक परिदृश्य-डॉ० श्याम कुमार झा	99
PHILOSOPHY	
Man and Nature in Jainism—Pradeep Kumar Tiwari	107
Climate Change: A Philosophical Analysis—Abhimanyu Kumar	116
ECONOMICS	
Child Labour: Problems and Prospect in Jharkhand and Bihar —Dr. Rakesh Kumar	119
COMMERCE	
Accounting for Responsibility in an Organization—Dr. Nasir Ahmad	126
Marginal Costing and Break-even Analysis—Dr. Kapil Harit	130
POLITICAL SCIENCE	
Journey of Nuclear Suppliers Group And India's Membership Bid —Dr. Md. Mushfiqur Alam	136
Ideology and Politics in India—Dr. Sudhir Kumar Singh	146
(5)/जनवरी-मार्च, 2017	मतादर्श


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



MANAGEMENT

History of Life Insurance in India—*Rajeev Gupta* 150

SOCIOLOGY

Industrialization and Development: Discontentment among Tribals in Orissa
—*Dr. Prem Lata* 163

HISTORY

The Spiritual Aspect of Marriage and Family in Ancient India
—*Sima Kumari* 168

GEOGRAPHY

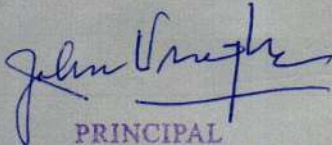
Socio-economic Changes Among the Pasies, A Geographical Study
of Saran Distric—*Ajit Kumar* 174

JOURNALISM

Emergence of Social Media in India: Truth Vs Propaganda
—*Tej Narayan Ram* 181

मतादर्श

(6) जनवरी-मार्च, 2017


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



आचार्यदण्डिनो विश्रुतचरिते कलानिरूपणम्

डॉ. चन्द्रभूषणझा:

संस्कृतविभागः, सेण्टस्टीफन्समहाविद्यालयः, दिल्लीविश्वविद्यालयः, दिल्ली-110007

संस्कृतवाङ्मयं विविधकलाकोविदानां सर्जकाणां बहुविधैः ग्रन्थरत्नैश्चकास्ति। एषु ग्रन्थेषु कवेर्दण्डिनः कृतिर्दशकुमारचरितं नाम किमपि विशिष्टं स्थानं संधते। पूर्वपीठिका-मुख्यभाग- उत्तरपीठिकेत्यभिधानेषु त्रिषु भागेषु व्यवस्थापितस्य दशकुमारचरितस्य मुख्यभागे अष्टौ उच्छ्वासाः सन्ति। अष्टमे उच्छ्वासे 'सुश्रुत' नाम्नो मन्त्रिणः पुत्रो 'विश्रुतो' नायकरूपेण प्रस्तुतः। विश्रुतस्य चरितस्य तमुकनिबन्धनादयमुच्छ्वासो विश्रुतचरितम् इत्यभिधानेन प्रथितः।

विश्रुतचरितं वीराद्भुतरसान्वितं पुस्तकं वर्तते। ग्रन्थादावेव वयं पश्यामो यद् भीषणे विन्ध्यारण्ये एकोऽष्टवर्षदेशीयो बालः बुभूक्षितः पिपासितः सन् विलपति। तत्समोपस्थे कूपे चैको निस्सहायो वृद्धो निपतितः। कथानायको विश्रुतस्तयोः साहाय्यम् आचरति। निर्जनो वनप्रान्तः। तत्र कूपो वर्तते। कूपे जलम् अस्ति। कूपाद् बहिः सतृष्णः शिशुः तिष्ठति। कूपाद् जलनिस्सारणस्य किमपि साधनं नास्ति। तत्र कथानायकः अरण्यप्रदेशे एक वंशनालीपादपं लभते। तस्यैव वंशनालीपादपस्य मुखाद् जलं निस्सार्य शिशोः पिपासां प्रणाशयति। अपि च, कूपपतितस्य निष्कलस्य बहिरुद्धरणार्थं रज्ज्वाभावे वनस्थां लतामेकाम् आश्रयते। पुनश्च बुभूक्षितस्य बालस्य बुभूक्षां सान्त्वयितुं विश्रुतः लकुचवृक्षस्य फलानि त्रोटयति। एते लकुचवृक्षाः अतीवोत्तुङ्गास्सन्ति। वियति क्षिप्ते शराः यावद् दूरं ब्रजन्ति तस्मादपि अधि कम् उच्छ्रिताः एते द्रुमाः। एषु द्रुमेषु कानिचन फलानि वृक्षस्य शिखरेषु लग्नानि सन्ति। अस्मिन् प्रकरणे आचार्यदण्डिना अवसरो लब्धो नायकस्य विश्रुतस्य पाषाणक्षेपणप्रावीण्यसमुपवर्णनस्य। स विशदोकरति यन्नायकः स्वोयैः प्रस्तरक्षेपैः महति दूरे स्थितान्यपि पञ्चषाणि फलानि भूमौ पातयितुं प्रभवति। तैः लकुचफलैश्च शिशोः बुभूक्षां निवारयति। तद्यथा,

"अथाहमभ्येत्य ब्रतत्या कयापि वृद्धमुतार्य तं च बालं वंशनालीमुखोद्भूताभिरदिभः फलैश्च पञ्चषैः शरक्षेपोच्छ्रितस्य लकुचवृक्षस्य शिखरात् पाषाणपातितैः प्रत्यानोतप्राणवृत्तिमा-पाद्य....."

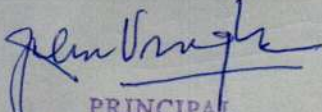
एवञ्चलु 'हस्तलाघव' नाम या कला वात्स्यायनाचार्येण कामसूत्रे चतुः षष्टिकलासु अन्यतमा परिगणिता तस्या एव निदर्शनं वयं प्राप्नुमः। पुनरग्रेऽपि हस्तलाघवस्य, अपि च अपरासां काषाञ्चन कलानां नदीष्णत्वं निरीक्ष्यते।

'विहारभद्र' नाम्नः सचिवस्य कथावर्णने वैजयिकीनां विद्यानां साक्षात्कारो भवति। विहारभद्रः अनन्तवर्मा नाम्नो नवनिवृत्तस्य नृपस्य कुमारसेवकः सचिवोऽस्ति। स एको भोगासक्तः परमविलासो अकर्मण्यो जनः। नृपस्य चिन्तानुवृत्तौ विहारभद्रः सुतयं कुशलः। अतः राज्ञः प्रसादात् लब्धप्रभूतवित्तोऽस्ति।

मतादर्श

संस्कृत

(94)/जनवरी-मार्च, 2017



PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



सर्वदर्शनसंग्रह एवं शङ्करदर्शन

डॉ० पङ्कज कुमार मिश्र

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृतविभाग
सेण्ट-स्टीफन्स कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



परिमल पब्लिकेशन्स
दिल्ली



प्रकाशक :
परिमल पब्लिकेशन्स
२७/२८, शक्ति नगर
दिल्ली - ११०००७
दूरभाष : २३८४५४५६, ४७०१५१६८

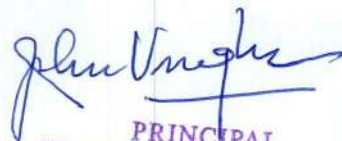
© लेखक

प्रथम संस्करण : वर्ष 2016

ISBN : 978-81-7110-479-6

मूल्य : ₹ 300.00

मुद्रक:
बालाजी ईमेजिंग सिस्टम्स
वजीरपुर गाँव, अशोक विहार
दिल्ली - ११००५२


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



INTERNATIONAL SEMINAR
ON
Global Diversity and Sustainable Development



वैश्विक विविधता एवं सतत विकास
(शोध पुस्तक एवं स्मारिका)

Patron

Dr. Amrendra Narayan Yadav

Vice-Chancellor, B.P. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur

Chief Editor

Dr. Harinarayan Thakur

Editor

Dr. R.K. Anand

Editorial Board

Dr. Jawed Siddique

Dr. Mrigendra Kumar

Dr. Arun Kumar

Dr. Ekbal Hussan Siddique

Dr. Shivshankar Prasad

प्रकाशक

मुंशी सिंह महाविद्यालय, मोतिहारी

बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



अनुक्रम

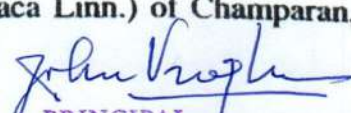
- प्राचार्य-सह-प्रधान सम्पादक की कलम से 05
- Editorial / From the Desk of Editor 09

English Abstract

- Globalization and Cultural Hybridization: A Critical Study of Sita's Ramayana/Dr. Vinita Jha/11
- Millennium Development Goals & Utilisation of RH & FP Services in Bihar : A Case Study of Giriak Block in Nalanda District/ Dr. Rabindra Nath Ojha, Annie Joya & Rajeev Ranjan (Mobile phones for Education: a case study) / Dr Arun Jee/ 12
- "Trends In India's Exports of Textiles & Garments And Strategies Under Changing Global Scenario"/Dr. Rabindra Nath Ojha, Dhiraj Kr. Mishra & Pinki Kumari/13
- Indian Muslims — Neglected or appeased /Dr. Mirza AB Baig / 14
- Demonetisation : The changing step towards Indian economy / Umesh Kumar Sinha/14
- Biodiversity and It's Conservation /Ashwini Kumar and Anamika/15
- Biodiversity & Sustainable Development/Kumari Rani Singh/16
- Advocacy of Global Diversity and Sustainable Development in Arundhati Roy's Writings/ Anant Kumar/17
- Pluralism and Sustainable Development of the Indian Society/Arshad Imam/18
- ICT : National Programme to Promote ICT in Education/Jafar Ekbal/19
- Conservation of Biodiversity: The Underpinnings for Sustainable Development/Ravi Manglam/20

Full Paper :

- Endangered Old World Vultures in South Asia, A case of Loss of Biodiversity and Gene Pool/Prof. M. J. Siddiqui /21
- SANSKRIT and Sustainable Development/Dr. Pankaj K. Mishra/26
- Effect of Locus of Control on Academic Achievements of Scheduled Caste Students/Dr. Arvind Kumar Ranjan/33
- Sustainable Diversity : The Indivisibility of Culture and Development /36
- Development, Environment and Brick Industry?/Mukesh Kumar/42
- Education Policy and Diversity Accommodation in India/Hasan Nourbakhsh/49
- Sustainable Development and Cultural Diversity/Hartmann Liebetrueth/56
- Linguistic Diversity under Threat : The Postglobalization Scenario/Dr Md Equebal Hussain /64
- China Factor in Indo-Bangladesh Relations in the 21st Century : An Overview/Prof. Ram Prakash/68
- Inclusive Classroom and Social Diversity in India : Myths and Challenges/Sanjay Kumar/74
- Hundreds of Home Languages in the Country and many in most Classrooms : Coping with Diversity in Primary Education in India/Dhir Jhingran/86
- Diversity and Sustainable Development /Arjun Appadurai/98
- Diversity in Nature and Culture (Background Document by UNEP)/101
- Biodiversity And The Utilization of Moringa Oleifera : A Sustainable Livelihood Approach /Shilpi Kumari/104
- Champa (Michelia champaca Linn.) of Champaran, India/Ratnesh Kumar Anand and Shailja Srivastava/106


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



SANSKRIT and Sustainable Development

Dr. Pankaj K. Mishra,

Associate Professor, Dept. of Sanskrit,
St. Stephen's College
University of Delhi, Delhi- 110007
E-mail:- Pankaj.k.mishr@gmail.com

ABSTRACT

This article focuses on sustainable development based on insights from the Language and Sanskrit scriptures. Its main purpose is not to damage the linguistic fragmentation of developing countries and the language blindness of development planners, but to highlight the positive role; languages can play as a source of empowerment and as an ally in the quest for sustainable results. It is not that I am going to propose that only Sanskrit has that power to sustain global development or that only Sanskrit has that ability to cement the gap of global diversity. Also, I would like to submit that in academics, research papers and articles on various dimensions of leadership for sustainable development have been written by several scholars over the years. However, very few papers are found on spiritual qualities and philosophical perspectives; especially from the ancient Indian context. As a result, the objective of this paper is to explore and uncover the intrinsic leadership developmental perspective of Sanskrit scriptures such as Bhagavadgītā, Upani'sads, Arthaśāstra etc. for sustainable development.

INTRODUCTION

Language is the only sustainable weapon that can bind a multilingual nation like India. Hindi, English, Classical and the regional languages occupy a very significant role in the formation of national values and integration of the largely populous nation like India where literacy is growing and education is dipping. After independence, English continues to enjoy its primacy not only in our educational system but also in every corner of our lives as a medium of instruction. Also simultaneously, other languages are on the verge of extinction.

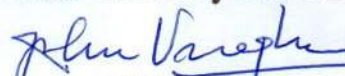
It is no secret that the way of our lives has become less sustainable throughout the time. If we continue these trends of over

consumption we will need more than one planet for the human species to survive. And yet it would not be enough. Therefore, now more than ever, it is necessary to come up with a practical yet sustainable solution.

The definition of sustainable development is broad. It includes economical, ecological, social and educational aspects of sustainability. Thus, there are many different ways to approach the issue of creating more sustainable communities. Communication consequently plays an important role in the progress of creating a sustainable way of life around the globe.

Global communication generates the discourse of sustainable development.

Global Diversity and Sustainable Development :: 26


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007





16TH WORLD SANSKRIT CONFERENCE
Bangkok, Thailand 2015



Poetry, Drama and Aesthetics

Select Papers

Editors

Radhavallabh Tripathi
Satyanarayan Chakraborty


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



Sanskrit Studies Centre, Silpakorn University, Bangkok, Thailand

Page 8 of 86

16th WSC Volume - 7

Contents

Contents	iii
Forward	v
1. Play of Colours in Bāṇabhaṭṭa's Kadambari (<i>Pūrvabhāga</i>) Vrushali M. Potnis-Damle	1
2. A Flash Light on Nirmala Sikh Stotras Virendra Kumar Alankar	15
3. Abhinavagupta's Style Of Interpreting The Illustrative Verses : A Critical Analysis Sridevi	25
4. Definition of <i>Kāvya</i> – A critical analysis in the light of Navya- Nyāya language and Methodology Anil PratapGiri	43
5. Performing Disfiguration: Pain, Death in Sanskrit Treatises and Performance Ahikla Vimal	51
6. On Ratnākara and Māgha Yamasaki, Kazuho	61
7. The Relation between Plot, Character, their Generalization and Aesthetic Pleasure in the Dramatic Art : An Indian Approach Suparna Bandyopadhyay	73
8. Satire in Kshemendra's Kalāvilāsa Harish Chandra Kukreti	77
9. Fresh Interpretation of <i>Abhijñāna</i> in <i>Abhijñānaśākuntalam</i> Pankaj K. Mishra	85
10. Pramāṇas as Conceptualized in Sanskrit Poetics Prof. Hari Dutt Sharma	
11. The term ' <i>sambhāvanā</i> ' explained in <i>utpekṣāalanīkāra</i> by Rhetoricians with special reference to <i>Nyāya</i> Philosophy Shiuli Basu	
12. Use of Similes Depicting Aesthetics in the Poetry of Mahakavi Ashvaghosha Dr. R. K. Mahajan	



R. K. Mahajan
PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007

Fresh Interpretation of *Abhijñāna in Abhijñānaśākuntalam*

Pankaj K. Mishra

Introduction

Realization and comprehension are the two pivotal impressions which are cast by the Poets on their connoisseurs/ readers and spectators through their works. Technically, these are known as *Rasa* and *upadeśa*. The former appeals the hearts and latter sharpens the mind.

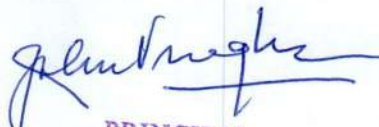
The intellect does not get restrained within the creation of the words which are fluid and infused with proper sentiments. It rather, brings forward the soothing and acceptable notions about the life. Along with being an artist the poet is a thinker too, who deals with the solutions of the worldly problems and analyses the contemporary beliefs, simultaneously. But, this skill of the poet lies in disguise since he does not want the flow of the sentiments to be obstructed. He employs the plot and the characters as per his perception. He creates his thoughts apparent through his poetic skills which enable him to delineate his vision emphatically and sentiments which make his ideas easily comprehensible. In the world of the poetry the poet is the ruler who can delineate the world the way he desires.

अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः
यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्तते.

Intended effort of Poet

An enlightened poet like Kālidāsa must not be read for sheer pleasure. In fact, he has a message to deliver through his works. And what he conveys through his works is not a trifle and cliché theory, but a thought depicting his own real self, which not only reflects the contemporary consciousness but also proposes the moral values which are ever-lasting and which enlighten the common people as well as scholars.

Pankaj K. Mishra


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के पूर्व प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना आवश्यक है।

ISBN : 978-81-932311-2-8

मूल्य : 100.00

संस्करण : 2016

© संपादक

प्रकाशक : मान्वाधिकार बुक्स

X/3282, गली नं. 4, रघुबरपुरा नं. 2,

गांधीनगर, दिल्ली-110031

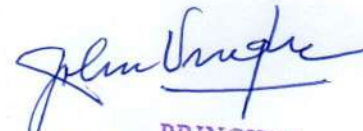
दूरभाष : +91-9810101036

ईमेल : sannidhyabooks@gmail.com

आवरण संयोजन : कुंवर रवींद्र

रुचिका प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित

Manwadhikar Ke Sawal : Bhartiya Samaj
Edited by Kaushal Panwar


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



क्रम

मीडिया का सामाजिक उत्तरदायित्व/संदीप	17
प्राचीन साहित्य और मानवाधिकार/ पंकज कुमार मिश्रा	24
भारतीय लोकतंत्र, मानवाधिकार और अंबेडकर/ विकास सिंह	32
मानवाधिकार और महिलाएं/ डॉ. ठंडी लाल मीना	37
साहित्य और मानवाधिकार की संबद्धता/ डॉ. अनिरुद्ध कुमार	44
जातिवाद से प्रसूत समस्याएं और मानवाधिकार/ डॉ. सरस्वती	53
स्त्री के संपत्ति के अधिकार/ अर्चना गौतम	59
मनु-व्यवस्था में स्त्रियों के सामाजिक अधिकार/ डॉ. सत्यपाल सिंह	63
भूमंडलीकृत समाज और स्त्री/ डॉ. हरदीप कौर	69
स्वामी दयानंद के भाष्य में नारी सशक्तिकरण/ इंदु सोनी	73
जातिरुद्ध समाज में मानवाधिकार/ मुकेश कुमार	75
महिला जनप्रतिनिधि और मानवाधिकार/ डॉ. सावित्री	84
स्वास्थ्य-शिक्षा-भोजन का अधिकार एवं	
भारतीय संविधान और मानवाधिकार/ वीर नारायण	96
वैदिक साहित्य और मानवाधिकार/ डॉ. जवाहरलाल	102
परिवार एवं समाज में बच्चियों के अधिकार/ शीशपाल	107
वैदिक समाज में मानव-अधिकारों की स्थिति/ डॉ. शशि बाला	110
घरेलू हिंसा और सम्मान हत्या/ रितु शर्मा-प्रीति चाहल	113
मानवाधिकार शिक्षा एवं बच्चों के अधिकार/ सीमा वर्मा	123
महिलाओं के मानवाधिकारों में राष्ट्रीय	
शैक्षिक दस्तावेजों की भूमिका/ डॉ. लता	128
मानवाधिकारों के लिए शिक्षा/ प्रवीण कुमार	143
डॉ. अंबेडकरवादी विचारधारा और मानवाधिकार/ शिशन सिंह	152
भारत में नारी की दशा, दिशा एवं मानवाधिकार/ सोनम	156
बंचित वर्ग तथा शिक्षा/ मनीषा प्रवीण	159
मानवाधिकार और मीडिया/ हर्षवर्धन पांडे-नित्या धींगरा	

J. K. Singh

प्राचीन साहित्य एवं मानवाधिकार

पंकज कुमार मिश्र

कोई भी अधिकार या आवश्यकता परिस्थिति का परिणाम है और उसी परिस्थिति के उन्हीं परिणामों से निःसृत कई सारे अधिकारों में से एक अधिकार मानवाधिकार है। इसका व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंधों से गहरा संबंध है। अतः एक ओर विधि-नियम जहां उसका आधार बनाते हैं, वहीं उसकी मानवीय संवेदना भी पर्याप्त भूमिका तैयार करती है। यहां यह भी स्मरण रखना अपेक्षित है कि किसी देश का इतिहास ही नहीं साहित्य भी किसी सीमा तक मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति में सहायक होता है।

मानवाधिकार, सभ्य समाज का सुसभ्य चिंतन, उन्नत सभ्यता की समुन्नत संस्कृति, उन्नीत विश्व का सुमधुर संगीत, समानता व स्वतंत्रता से समन्वित, उत्तम से सर्वोत्तम की ओर गमन का सर्वोत्कृष्ट संकल्प है। यद्यपि यह चिंतन एक विचारधारा के रूप में कदाचित् बीसवीं शताब्दी में उद्भूत हुआ, पुनरपि, ऐसा नहीं कहा जा सकता, न ही कहा जाना चाहिए कि ऐसे विचार पहले विद्यमान नहीं थे या व्यवहार में नहीं थे। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि ऐसे विचारों की पहले आवश्यकता नहीं थी या आवश्यकता नहीं पड़ी। बल्कि इसे इस प्रकार समझा जा सकता है जब हम स्वतः किसी अनुशासन के प्रति समर्पित हैं तो उसके लिए किसी भी प्रकार की विधिनियमव्यवस्था नहीं बनाई जाती। किंतु, जब इस अनुशासन के प्रति हम उपेक्षा, अवहेलना व अनादर का भाव उत्पन्न करने लगते हैं तब उस अनुशासन की रक्षा में विधि, नियम आदि का निर्माण किया जाता है। इस दृष्टि से न केवल भारत अपितु, अशेष विश्व में मानवाधिकार का मूल प्राचीन भारतीय साहित्यों एवं धर्मग्रन्थों में दूँदा जा सकता है।

मानव एवं अधिकार मानो वाणी एवं अर्थ की तरह अद्वैत भाव को प्राप्त है। बिना मानव के अधिकार की परिकल्पना नहीं की जा सकती, न ही बिना अधिकार के मानव की कल्पना की जा सकती है। यह एक ऐसी सार्वभौमिक आवश्यकता है, सार्वजनीन याचना है जिसे यत्र यत्र धूम्रः तत्र तत्र वह्निः की तरह परिभाषित करने





تخلیقی جوہر

حصہ - 1

تخلیقی تحریر اور ترجمہ کی دوری کتاب
گیارہویں جماعت کے لیے

John D. Singh

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007

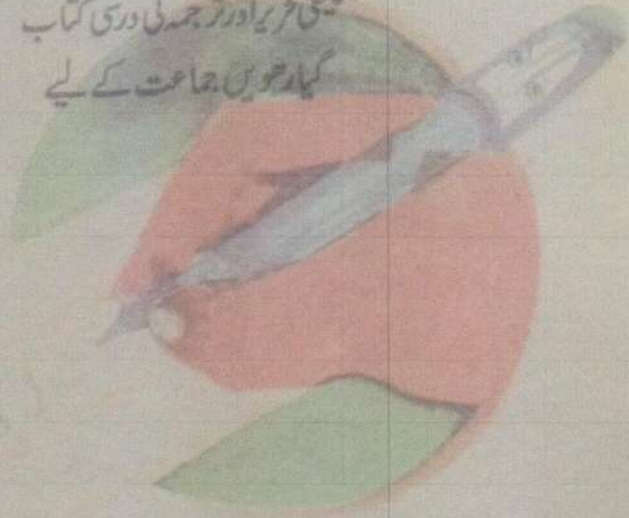




حصہ - 1

تخلیق تحریر اور ترجمہ کی درسی کتاب
گیارہویں جماعت کے لیے

اس کتاب کی تخلیق و تالیف میں مولانا سید سعید احمد صاحب نے اہم کردار ادا کیا ہے۔ ان کے علاوہ مولانا سید سعید احمد صاحب نے اس کتاب کی تصدیق و تصحیح کی ہے۔ اس کتاب کی اشاعت کے لیے مولانا سید سعید احمد صاحب نے اپنی ساری صلاحیتیں وقف کر دی ہیں۔ ان کے علاوہ مولانا سید سعید احمد صاحب نے اس کتاب کی اشاعت کے لیے اپنی ساری صلاحیتیں وقف کر دی ہیں۔ ان کے علاوہ مولانا سید سعید احمد صاحب نے اس کتاب کی اشاعت کے لیے اپنی ساری صلاحیتیں وقف کر دی ہیں۔



विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

नیشنल काउन्सिल ऑफ ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



کمیٹی برائے تخلیقی جوہر-1

خصوصی صلاح کار

شیم خنی، پروفیسر ایمریٹس، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

چیف کوآرڈینیٹر

کے۔سی۔ترپاشی، پروفیسر اینڈ ہیڈ، ڈپارٹمنٹ آف ایجوکیشن ان لینگویجز، این سی ای آر ٹی، نئی دہلی

اراکین

اقبال مسعود، سابق جوائنٹ سکریٹری، مدھیہ پردیش اردو اکادمی، بھوپال

آفاق ندیم خاں، اسسٹنٹ پروفیسر، کالج آف ٹیچر ایجوکیشن، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، بھوپال، مدھیہ پردیش

خان شاہد دہاب، لکچرر، گورنمنٹ بوائز سینئر سیکنڈری اسکول، نورنگر، جامعہ نگر، نئی دہلی

خواجہ محمد اکرام الدین، پروفیسر، ہندوستانی زبانوں کا مرکز، جواہر لعل نہرو یونیورسٹی، نئی دہلی

زیر رضوی، سابق ڈائریکٹر، آل انڈیا ریڈیو، نئی دہلی

شامخ قدوائی، پروفیسر، ڈپارٹمنٹ آف جرنلزم، علی گڑھ مسلم یونیورسٹی، علی گڑھ، اتر پردیش

شاہد پرویز، پروفیسر اینڈ ریجنل ڈائریکٹر، دہلی ریجنل سینٹر، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، دہلی

شیم احمد، اسسٹنٹ پروفیسر، شعبہ اردو اور فارسی، سینٹ اسٹیفنز کالج، دہلی یونیورسٹی، دہلی

صغیر اختر، ٹی جی ٹی، اردو، مظہر الاسلام سکندری اسکول، فراس خانہ، دہلی

عتیق اللہ، پروفیسر (ریٹائرڈ)، شعبہ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

علی رفادتی، پروفیسر، ڈپارٹمنٹ آف لنگویسٹس، علی گڑھ مسلم یونیورسٹی، علی گڑھ، اتر پردیش

غضنفر علی، پروفیسر اینڈ ڈائریکٹر، اکیڈمی فار پروفیشنل ڈیولپمنٹ آف اردو میڈیم ٹیچرس، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

فیروز عالم، اسسٹنٹ پروفیسر، ڈائریکٹوریٹ آف ڈسٹنس ایجوکیشن، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، حیدرآباد

قمر الہدی فریدی، پروفیسر، شعبہ اردو، علی گڑھ مسلم یونیورسٹی، علی گڑھ، اتر پردیش

محمد احسن، پروفیسر اینڈ ریجنل ڈائریکٹر، بھوپال ریجنل سینٹر، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، بھوپال، مدھیہ پردیش

John Krupar

پہلا اردو ایڈیشن

فروری 2016 پہلا گن 1937

PD 5H SPA

© نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ 2016

جملہ حقوق محفوظ

- ہاشمی پہلے سے اجازت حاصل کیے بغیر، اس کتاب کے کسی بھی حصے کو دوبارہ چھپانے، دوبارہ اشاعت کے ذریعے بازیافت کے سلسلے میں اس کو محفوظ کرنا یا برقیاتی، میکانیکی، فوٹو کاپینگ، ریپراڈنگ کے کسی بھی ذریعے سے اس کی ترمیم کرنا منع ہے۔
- اس کتاب کو اس شرط کے ساتھ فروخت کیا جا رہا ہے کہ اسے ہاشمی اجازت کے بغیر، اس کتاب کے علاوہ جس میں کہ یہ چھاپی گئی ہے، یعنی، اس کی موجودہ جلد بندی اور سرورق میں تبدیلی کر کے تجارت کے طور پر نہ تو مستعار دیا جاسکتا ہے، نہ دوبارہ فروخت کیا جاسکتا ہے، نہ کہ یہ پڑایا جاسکتا ہے اور نہ ہی تلف کیا جاسکتا ہے۔
- کتاب کے صفحہ پر جو قیمت درج ہے وہ اس کتاب کی گنج قیمت ہے۔ کوئی بھی نخر جانی شدہ قیمت چاہے وہ برقی ہیر کے ذریعے یا چھپکی یا کسی اور ذریعے ظاہر کی جائے تو وہ غلط تصور رہی اور ناقابل قبول ہوگی۔

این سی ای آر ٹی کے پبلی کیشن ڈویژن کے دفاتر

		این سی ای آر ٹی کیسپس
		سری اروندو مارگ
		نئی دہلی - 110016
011-26562708	فون	108,100 فٹ روڈ ہوسڈے کیرے ہیلی
		ایسٹیشن ہاؤسنگری III اسٹیج
080-26725740	فون	بنگلور - 560085
		نوجیون ٹرسٹ بھون
		ڈاک گھر، نوجیون
079-27541446	فون	احمد آباد - 380014
		سی ڈبلیو سی کیسپس
		برہمقابل ڈھانگل بس اسٹاپ، پانی ہاٹی
033-25530454	فون	کولکتہ - 700114
		سی ڈبلیو سی کاسپیکس
		مالی گاؤں
0361-2674869	فون	گواہٹی - 781021

قیمت: ₹ 130.00

اشاعتی ٹیم

ہیڈ پبلی کیشن ڈویژن	:	دینیش کمار
چیف ایڈیٹر	:	شویتا اپیل
چیف برنس فبجر	:	گوتم گانگولی
چیف پروڈکشن آفیسر (انچارج)	:	ارون چتکارا
ایڈیٹر	:	سید پرویز احمد
اسٹنٹ پروڈکشن آفیسر	:	پرکاش ویر

این سی ای آر ٹی واٹر مارک 80 جی ایس ایم کاغذ پر شائع شدہ
سکرپٹری، نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ،
شری اروندو مارگ، نئی دہلی نے شری ورندا بن گرافکس،
ای-34، سیکٹر-7، نوئیڈا-201301 میں چھپوا کر
پبلی کیشن ڈویژن سے شائع کیا۔

Jauhar

تخلیقی جوہر

حصہ - 2

تخلیقی تحریر اور ترجمہ کی درسی کتاب
بارہویں جماعت کے لیے



Julian Dangle
PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



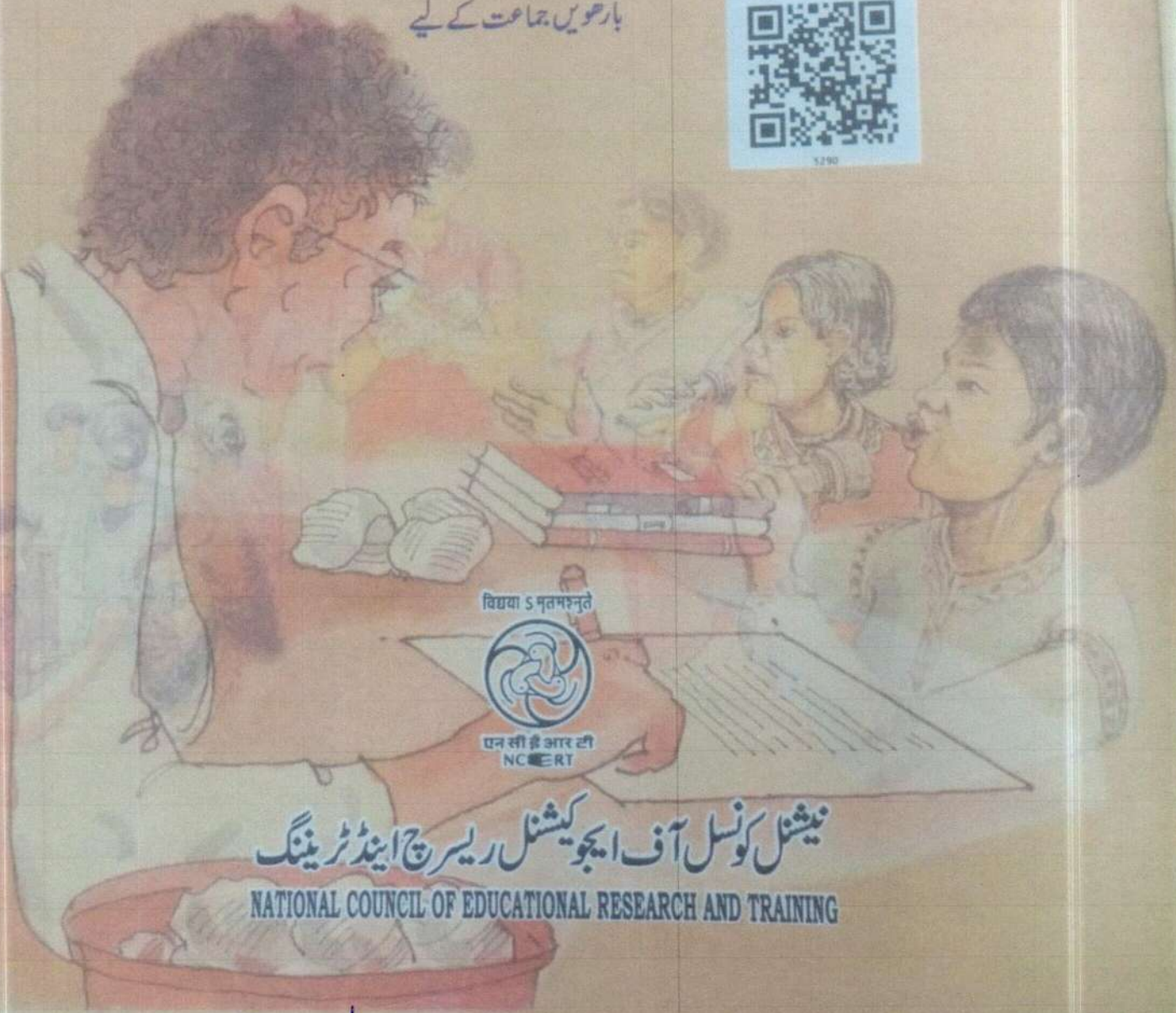
تخلیقی جوہر

حصہ - 2

تخلیقی تحریر اور ترجمہ کی درسی کتاب
بارہویں جماعت کے لیے



5290



विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

नیشنल کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

John Duggan
PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



جملہ حقوق محفوظ

- ناشری پہلے سے اجازت حاصل کیے بغیر، اس کتاب کے کسی بھی حصے کو دوبارہ منظر کرنا، بار بار دست کے ذریعے بازیافت کے سلسلے میں اس کو محفوظ کرنا یا برقیاتی، ریجسٹرڈ یا فونو گرافک، یا دیگر ذریعے سے کسی بھی ذریعے سے اس کی ترمیم کرنا منع ہے۔
- اس کتاب کو اس شرط کے ساتھ فروخت کیا جا رہا ہے کہ اسے ناشری اجازت کے بغیر، اس حصے کے علاوہ جس میں کہ یہ چھاپی گئی ہے یعنی، اس کی موجودہ جلد بندی اور سرورق میں تبدیلی کر کے تجارت کے طور پر نہ تو مستعار دیا جاسکتا ہے، نہ وہ بار بار فروخت کیا جاسکتا ہے، نہ کہ اسے پڑا یا ہانکا ہے اور نہ ہی تلف کیا جاسکتا ہے۔
- کتاب کے سلسلے پر جو قیمت درج ہے وہ اس کتاب کی صحیح قیمت ہے۔ کوئی بھی نظر ثانی شدہ قیمت چاہے وہ برقی مہر کے ذریعے یا قلمی یا کسی اور ذریعے ظاہر کی جائے تو وہ غلط سمجھ کر ہوگی اور ناقابل قبول ہوگی۔

پہلا ایڈیشن

دسمبر 2016 ہوس 1938

دیکر طاعت

جون 2019 حبشہ 1941

PD 2H SPA

© نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ، 2016

این سی ای آر ٹی کے پبلی کیشن ڈویژن کے دفاتر

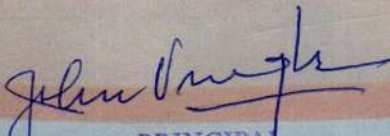
	این سی ای آر ٹی کمپس	
	سری اروند مارگ	
	نئی دہلی - 110016	فون 011-26562708
	108,100 فٹ روڈ ہوسٹل کے کیرے پبلی	
	ایسٹیشن بنا شکرہ III اسٹیج	
	پونگلورو - 560085	فون 080-26725740
	نوجیون ٹرسٹ بھون	
	ڈاک گھر، نوجیون	
	احمد آباد - 380014	فون 079-27541446
	سی ڈبلیو سی کمپس	
	بمقابل ڈھانگل بس اسٹاپ، پانی ہاٹی	
	کولکاتا - 700114	فون 033-25530454
	سی ڈبلیو سی کامپلیکس	
	مالی گاؤں	
	گواہاٹی - 781021	فون 0361-2674869

قیمت: ₹ 265.00

اشاعتی ٹیم

ہیڈ، پبلی کیشن ڈویژن	:	محمد سراج انور
چیف ایڈیٹر	:	شویتا آپل
چیف پروڈکشن آفیسر	:	ارون چتکارا
چیف بزنس مینجر	:	بباش کمار داس
ایڈیٹر	:	سید پرویز احمد
پروڈکشن اسسٹنٹ	:	سنیل کمار

این سی ای آر ٹی واٹر مارک 80 جی ایس ایم کاغذ پر شائع شدہ
سکرینری، نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ، شری
اروند مارگ، نئی دہلی نے ایس جی پرنٹ پریکس پرائیویٹ لمیٹڈ،
F-478، سیکٹر 63، نویڈا-201301 (اتر پردیش) میں
چھپوا کر پبلی کیشن ڈویژن سے شائع کیا۔


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



کمیٹی برائے تخلیقی جوہر-2

خصوصی صلاح کار

شیم خنی، پروفیسر ایمرینٹس، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

چیف کوآرڈینیٹر

کے۔سی۔ترپانچی، پروفیسر اینڈ ہیڈ، ڈپارٹمنٹ آف ایجوکیشن ان لینگویجز، این سی ای آر ٹی، نئی دہلی

اراکین

ابوبکر عباد، اسسٹنٹ پروفیسر، شعبہ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

احمد خان، اسسٹنٹ پروفیسر، شعبہ اردو، ذاکر حسین دہلی کالج، نئی دہلی

انجم عثمانی، ڈپٹی ڈائریکٹر (ریٹائرڈ)، دوردرشن، نئی دہلی

خان شاہد و باب، لکچرار، گورنمنٹ بوائز سینئر سیکنڈری اسکول، نورنگر، جامعہ مگر، نئی دہلی

زیر شاداب، جے آر پی اکادمک، این ٹی ایس انڈیا، سی آئی آئی ایل، مانس گنگوتری، میسور، کرناٹک

سیح الرحمن، سابق سینئر ایڈیٹر، ایم ایچ ون نیوز، نئی دہلی

سید محمد انوار عالم، پروفیسر اینڈ چیئر پرسن، ہندوستانی زبانوں کا مرکز، جواہر لعل نہرو یونیورسٹی، نئی دہلی

شاہد پرویز، پروفیسر اینڈ ریجنل ڈائریکٹر، دہلی ریجنل سینٹر، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، دہلی

شیم احمد، اسسٹنٹ پروفیسر، شعبہ اردو اور فارسی، سینٹ اسٹیفنز کالج، دہلی یونیورسٹی، دہلی

صغیر اختر، ٹی جی ٹی، اردو، مظہر الاسلام سیکنڈری اسکول، فراش خانہ، دہلی

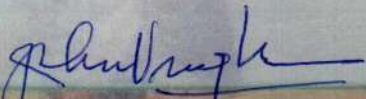
ظہیر رحمتی، اسسٹنٹ پروفیسر، ذاکر حسین پی جی ایونٹ کالج، نئی دہلی

عتیق اللہ، پروفیسر (ریٹائرڈ)، شعبہ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

فیروز عالم، اسسٹنٹ پروفیسر، ڈائریکٹوریٹ آف ڈسٹنس ایجوکیشن، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، حیدرآباد

قمر اہدی فریدی، پروفیسر، شعبہ اردو، علی گڑھ مسلم یونیورسٹی، علی گڑھ

محمد احسن، پروفیسر اینڈ ریجنل ڈائریکٹر، بھوپال ریجنل سینٹر، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، بھوپال، مدھیہ پردیش


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



اُردو قواعد اور انشا

ثانوی اور اعلیٰ ثانوی درجات کے لیے

John Hughes

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



اُردو قواعد اور انشا

ثانوی اور اعلیٰ ثانوی درجات کے لیے



نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ

John Dwyer
PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



کمیٹی برائے اردو قواعد اور انشا

چیئر مین، مشاورتی کمیٹی برائے زبان

نامور سنگھ، پروفیسر ایمپریٹس، جواہر لعل نہرو یونیورسٹی، نئی دہلی

خصوصی صلاح کار

شمیم حنفی، پروفیسر ایمپریٹس، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

چیف کوآرڈینیٹر

رام جنم شرما، سابق پروفیسر اینڈ ہیڈ، ڈپارٹمنٹ آف لینگویئجز، این سی ای آر ٹی، نئی دہلی

اراکین

آفاق حسین صدیقی، پروفیسر (ریٹائرڈ) مادھو کالج، اجین

اقبال مسعود، سابق جوائنٹ سکریٹری، مدھیہ پردیش اردو اکادمی، بھوپال

خواجہ محمد اکرام الدین، پروفیسر، جواہر لعل نہرو یونیورسٹی، نئی دہلی

راجیش مشرا، ایسوسی ایٹ پروفیسر، آر آئی ای، اجمیر

رضوان الحق، اسسٹنٹ پروفیسر، آر آئی ای، بھوپال

سلیم شہزاد، اردو استاد (ریٹائرڈ)، مالگاؤں

شمیم احمد، اسسٹنٹ پروفیسر، سینٹ اسٹیفنس کالج، دہلی

عبدالرشید، لیکچرار، اردو خط کتابت کورس، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

عتیق اللہ، پروفیسر (ریٹائرڈ) دہلی یونیورسٹی، دہلی

غضنفر علی، ڈائریکٹر، اکادمی فار پروفیشنل ڈیولپمنٹ آف اردو میڈیم ٹیچرس، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

قاسم خورشید، ہیڈ، ایس سی ای آر ٹی، پٹنہ بہار


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



Urdu Qawaid aur Insha (Urdu Grammar) for Secondary and Senior Secondary Stages

ISBN 978-93-5007-205-9

پہلا ایڈیشن

ستمبر 2012 آسٹوین 1934

دیگر طباعت

دسمبر 2014 پوش 1936

فروری 2016 پھالگن 1937

اپریل 2017 چیترا 1939

PD 6T SPA

© نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ، 2012

قیمت : ₹ 95.00

جملہ حقوق محفوظ

- ناشر کی پہلے سے اجازت حاصل کیے بغیر، اس کتاب کے کسی بھی حصے کو دوبارہ پیش کرنا، بارداشت کے ذریعے بازیافت کے سلسلے میں اس کو محفوظ کرنا یا برقیاتی، میکانیکی، فوٹو کاپنگ، ریکارڈنگ کے کسی بھی ذریعے سے اس کی تزیین کرنا منع ہے۔
- اس کتاب کو اس شرط کے ساتھ فروخت کیا جا رہا ہے کہ اسے ناشر کی اجازت کے بغیر، اس نصاب کے علاوہ جس میں کہ یہ چھاپی گئی ہے، یعنی، اس کی موجودہ جلد بندی اور سرورق میں تبدیلی کر کے، تجدید کے طور پر نہ تو مستعار دیا جاسکتا ہے، نہ دوبارہ فروخت کیا جاسکتا ہے، نہ کرایہ پر دیا جاسکتا ہے اور نہ ہی تکف کیا جاسکتا ہے۔
- کتاب کے صفحے پر جو قیمت درج ہے، وہ اس کتاب کی صحیح قیمت ہے۔ کوئی بھی نظر ثانی شدہ قیمت چاہے دور دور کی ہر کے ذریعے یا چھپی یا کسی اور ذریعے ظاہر کی جائے تو وہ غلط تصور رکھنی اور قابل قبول ہوگی۔

این سی ای آر ٹی کے پبلی کیشن ڈویژن کے دفاتر

این سی ای آر ٹی کیپس

سری اردندو مارگ

نئی دہلی - 110016

فون 011-26562708

108,100 فٹ روڈ ہوسڈے کیر سے ٹیلی

ایسٹیشن بناشکری III اسٹیج

فون 080-26725740

560085

نوجیون ٹرسٹ بھون

ڈاک گھر، نوجیون

فون 079-27541446

380014

سی ڈبلیو سی کیپس

بمقابل ڈھانگل بس اسٹاپ، پانی ہائی

فون 033-25530454

700114

سی ڈبلیو سی کاپلیکس

مالی گاؤں

فون 0361-2674869

781021

گواہٹی

اشاعتی ٹیم

- ہیڈ، پبلی کیشن ڈویژن : محمد سراج انور
- چیف ایڈیٹر : شویتا اپیل
- چیف بزنس مینجر : گوتم گانگولی
- چیف پروڈکشن آفیسر (انچارج) : ارون چتکارا
- ایڈیٹر : سید پرویز احمد
- پروڈکشن آفیسر : عبدالنعیم

این سی ای آر ٹی واٹر مارک 80 جی ایس ایم کاغذ پر شائع شدہ
سکرپٹری، نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ،
شری اردندو مارگ، نئی دہلی نے پنجاب پرنٹنگ پریس،
C-92، اوکھلا انڈسٹریل ایریا، فیز-1، نئی دہلی - 110020
میں چھپوا کر پبلی کیشن ڈویژن سے شائع کیا۔

Jan Varghese
PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



اُردو تدریسیات

Urdu Pedagogy - 2

درسی کتاب برائے بی ایڈ



J. Singh
PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007





ادب کی تدریس
 فتوں سے چاول
 آکر سکیں۔ ان کو
 نیال کرنے کی
 سے، تجربے اور
 تربیت کار
 کے ہر مرحلے
 یا جائے گا۔
 فی مشوروں

کمیٹی برائے اردو تدریسیات

مخصوصی صلاح کار

شیم منگی، پروفیسر ایمریشن، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

چیف کوآرڈینیٹر

کے۔ سی۔ تریپانگی، پروفیسر اور ہیڈ، ڈپارٹمنٹ آف ایجوکیشن ان لینگویجز، این سی ای آر ٹی، نئی دہلی

اراکین

این کتول، پروفیسر اور صدر، شعبہ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

ابوبکر عتاد، پروفیسر، شعبہ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

آفاق ندیم خان، اسسٹنٹ پروفیسر، کالج آف ٹیچر ایجوکیشن، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، بھوپال

جسیم احمد، پروفیسر، آئی اے ایس ای، فیکلٹی آف ایجوکیشن، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

شیم احمد، اسسٹنٹ پروفیسر، شعبہ اردو اور فارسی، سینٹ اسٹیفنز کالج، دہلی یونیورسٹی، دہلی

صغیر اختر، بی جی ٹی، اردو، مظہر الاسلام سکندری اسکول، فراش خانہ، دہلی

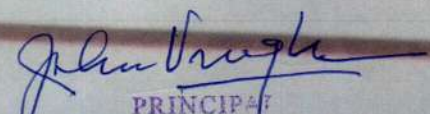
طلعت عزیز، پروفیسر (ریٹائرڈ)، آئی اے ایس ای، فیکلٹی آف ایجوکیشن، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

عتیق اللہ، پروفیسر (ریٹائرڈ)، شعبہ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

محمد قمر سلیم قریشی، ایسوسی ایٹ پروفیسر، انجمن اسلام، اکبر پیر بھائی کالج آف ایجوکیشن، واشی، نوی ممبئی

محمد نعمان خاں، پروفیسر، (ریٹائرڈ) ڈپارٹمنٹ آف ایجوکیشن ان لینگویجز، این سی ای آر ٹی، نئی دہلی

محمد نفیس حسن، لیکچرار، اردو، گورنمنٹ ہوائی سینٹر سکندری اسکول، بیلا روڈ، دریا گنج، نئی دہلی


 PRINCIPAL
 ST. STEPHEN'S COLLEGE
 DELHI-110007



حصہ - 2

اُردو تدریسیات

Urdu Pedagogy - 2

درسی کتاب برائے بی ایڈ

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

नیشنल کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

John Singh

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007

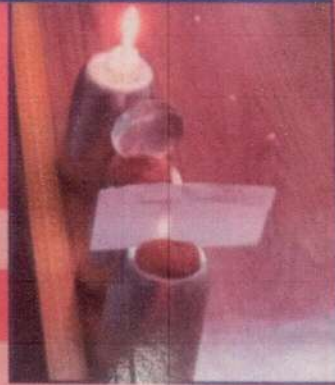
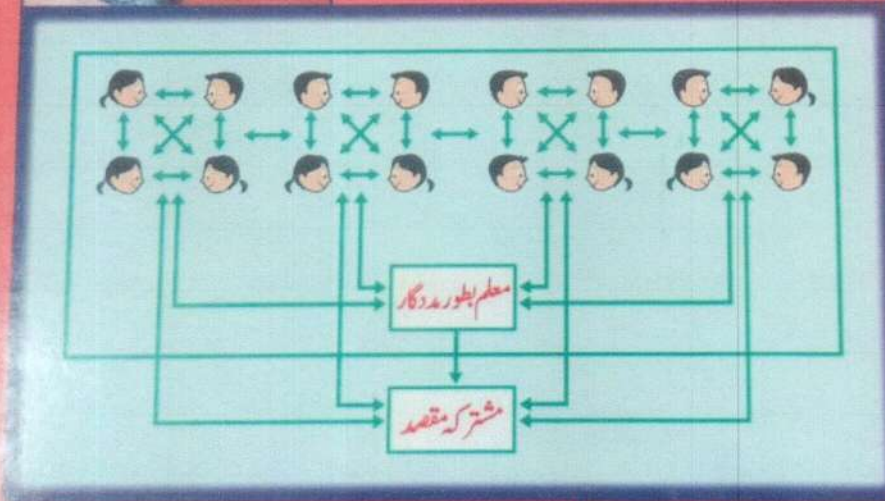


سائنس کی تدریسیات

(Pedagogy of Science)



درسی کتاب برائے بی ایڈ



حصہ II

Principal

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



طبیعیاتی سائنس (PHYSICAL SCIENCE)

سائنس کی تدریسیات (Pedagogy of Science)

طبیعیاتی سائنس (PHYSICAL SCIENCE)

حصہ II

درسی کتاب برائے بی ایڈ

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

नیشنल कौन्सिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च این्ड ट्रेनिंग
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

John Unnigle
PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



(xii)

اس کتاب کو پیش کرنے میں پہلی کیشن ڈپارٹمنٹ، NCERT کی کوششوں کا بھی ہم اعتراف کرتے ہیں۔

کونسل مسودے کے اردو ترجمے اور ویننگ کے لیے منعقد ورکشاپ کے شرکاء وسیم احمد، بللہ ہاؤس جامعہ نگر، نئی دہلی؛ ڈاکٹر

شیم احمد، اسسٹنٹ پروفیسر (اردو) سینٹ اسٹیفن کالج، دہلی یونیورسٹی، دہلی؛ ڈاکٹر سہیل احمد فاروقی، ڈاکٹر نگر، نئی دہلی

ڈاکٹر جسیم احمد، ٹیچر ٹریننگ انسٹی ٹیوٹ، فیکلٹی آف ایجوکیشن، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی؛ شباہت حسین، ڈاکٹر ڈاکٹر حسین بیہوڑ

سینئر سینڈری اسکول، مین روڈ جعفر آباد، دہلی؛ ڈاکٹر خان شاہد وہاب، لکچرار، گورنمنٹ یو ایئرڈ سینئر سینڈری اسکول، نورنگر

جامعہ نگر، نئی دہلی؛ شاہ سیف اللہ، امجد اپارٹمنٹ، ڈاکٹر نگر اوکھلا، نئی دہلی؛ عارف حسن کاظمی، جعفر آباد، دہلی؛ سید ظفر الاسلام

نور اپارٹمنٹ، ابوالفضل انکلیو جامعہ نگر، نئی دہلی؛ ڈاکٹر مظفر حسین (پرنسپل) جامعہ سینئر سینڈری اسکول، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

ڈاکٹر محمد خالد مبشر الظفر، ہیڈ ڈپارٹمنٹ ٹرانسلیشن مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، حیدرآباد؛ ڈاکٹر ابو شہیم خان، اسسٹنٹ

پروفیسر (اردو) ڈپارٹمنٹ ہری سنگھ گوڑ یونیورسٹی، ساگر (ایم. پی.)؛ ولی احمد اسلام آباد کالونی، گلبرگہ؛ سلیم شہزاد (ریٹائرڈ)

اردو ٹیچر، منگوارو روڈ، مالے گاؤں؛ ڈاکٹر شمس الہدی، اسسٹنٹ پروفیسر، ڈپارٹمنٹ آف اردو مولانا آزاد نیشنل اردو

یونیورسٹی، حیدرآباد؛ ڈاکٹر انیس صدیقی، ہیڈ ڈپارٹمنٹ آف اردو، نیشنل پی یو کالج، گلبرگہ؛ ڈاکٹر غلام نبی مومن، کلیمان

ڈاکٹر فیروز عالم، اسسٹنٹ پروفیسر، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی، حیدرآباد؛ محمد نعمان خان، پروفیسر (ریٹائرڈ)

ڈپارٹمنٹ پی این بی کالونی، عید گاہ ہل، بھوپال کا بھی شکریہ ادا کرتی ہے۔ بلال احمد مومن، بھینوٹی ڈاکٹر سید تنگی خٹیا، ایوت محل

عبدالحمید انصاری، مالے گاؤں، عزیز فاطمہ، ایسوسی ایٹ پروفیسر، انجمن اسلام اکبر پیر بھائی کالج آف ایجوکیشن، ممبئی اور شمع تارہ پور

والا (پرنسپل انجمن اسلام، سیف طیب جی گرلز ہائی اسکول اینڈ جونیئر کالج) ممبئی، محمد فاروق انصاری، پروفیسر، ڈپارٹمنٹ آف

ایجوکیشن ان لینگویج، این سی ای آر ٹی، نئی دہلی کے اسمائے گرامی شامل ہیں۔ اس کتاب کی تیاری میں اسسٹنٹ ایڈیٹر

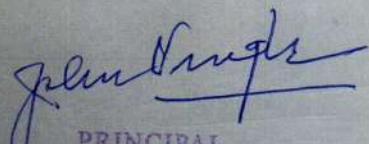
طیب احمد بیگ، ایڈیٹوریل اسسٹنٹ محمد شارب ضیاء اور ڈی ٹی سی آریٹرز ریاض احمد، محمد تمیز حسین، شبیر احمد

فروخ فاطمہ نے اپنی خدمات پیش کیں۔ کونسل ان تمام لوگوں کی بے حد ممنون ہے۔

حصہ II

10-

11-


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



The Journal of Contemporary Thought Summer Issue - 2016

Contents:

South Asia and the Discourse of Western Modernity
- B.P. Giri

Resistance to Canon: Towards a New Approach to Sanskrit
Literary Theories
- Sreenath V.S.

(Ur)-Branding of the Shield of Achilles:
Rhetoric as Mediated Context
- Pragyant Rath

Spinning the Loom of Freedom: Gandhi and the Charkha
- Rashmi Tikku

Rethinking the Notion of Gaze and Male Hegemony
in Hindi Cinema
- Susmita Ghosh

Tech(k)no(w)logos: Hyper-Technology and Post-Humanism
- Silika Mohapatra


Authenticity, Right Relation and the Return of
the Repressed Native in James Galvin's *The Meadow*
- Ian K. Jensen

Of Seasons and Cloistered Spaces: Reading Allan Sealy's
The Everest Hotel
- Satish C. Aikant

'Objectifying' Jewish Consciousness: The 'Matter' of the Politics
of Antisemitism and Zionism in Howard Jacobson's
The Finkler Question
- Prakash Joshi

"Critical Theory is Most Useful When It is Critical"
An Interview with Simon Gikandi
- Simon Gikandi & Jyotirmoy Prodhani

Notes on Contributors


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



Paper: *Tech(k)no(w)logos: Hyper-Technology and Post-Humanism*

ABSTRACT

This paper is an investigation into the nature of technological objects, situated against the backdrop of recent theorizations in areas like post-human studies and object-oriented ontology. It attempts to articulate the phenomenological and ontological ramifications of hyperreality, surveying various contemporary technological inventions and their impact on how we conceive concepts like reality, actuality and virtuality.

KEYWORDS

Philosophy of Technology, Object-Oriented Ontology, Post-Humanism, Hyperreality, Hyperobjects, Virtuality, Simulation, Techné

BIO-NOTE

Silika Mohapatra teaches Philosophy at St. Stephen's College, University of Delhi and previously taught at Lady Shri Ram College for Women, University of Delhi. She pursued her bachelors and masters from St. Stephen's College, thereafter going on to do her MPhil at the University of Ottawa under the Canadian Commonwealth Scholarship. Her doctoral work is on Object-Oriented Ontology. She is the co-editor of the book *Indian Political Thought: A Reader* (London: Routledge, 2010), and the managing editor of the international journal *Plurilogue*. She is also an artist, photographer and graphic designer.



PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



INTERVENTIONS



CAESURAE: POETICS OF CULTURAL TRANSLATION VOL2: 1, (ISSN 2454-9495)
SPECIAL ISSUE, JANUARY, 2017

In Defence of Dialogue Reflections on J. N. Mohanty

Silika Mohapatra

Assistant Professor
Department of Philosophy
St. Stephen's College
University of Delhi, India

Abstract

In a world that continues to grapple with the problem of the 'other', the predicament has been to bring the 'alien' and the 'familiar' to a dialogue. This essay argues that the philosophical quest of J. N. Mohanty has been to create the possibility of such an exchange. To this end, he develops a method that allows for the negotiation of differences to be situated within the horizons of commonality. Mohanty's life-long pursuit is evinced by his concern to bring together, at the level of religion and politics (a) Sri Aurobindo and Gandhi, at the level of concepts (b) fact and value, (c) theory and practice, and at the level of the very modes of thinking (d) East and West. This essay reconstructs the dialogue between the two-fold problems that engage Mohanty, inquiring into his relentless attempt to 'overcome', neither by denying distinctions nor by reducing them, but by recognizing them and considering a form of negotiation. It traces the motivation to 'overcome' to at least three different traditions that influenced Mohanty, *one*, phenomenology, *two*, Indian culture, and *three* the philosophy of Sri Aurobindo. Finally, the problems that confronted Mohanty are demonstrated through *three sets* of schisms, which in turn relate to three broad problems: (1) dissociation of the body from the mind; (2) unity of the world versus its multifarious plurality; (3) East versus West. This revisits the problem with which we began, that of the 'alien' versus the 'familiar'. To overcome conflict in the face of diversity, one must be prepared to confront the 'alien' and in so doing prepare the grounds for a mutual exchange, an exercise of give and take. Mohanty illustrates this through his interpretation of cultures as intersecting circles as opposed to isolated units. The faith in overlapping worlds reclaims the possibility of dialogue in a society with plural motives and responses to cultural, political, economic and philosophical concerns.

Keywords: *dialogue, synthesis, self, plurality*

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007





ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UGC SPONSORED

NATIONAL SEMINAR



ON

Recent Innovations in Chemical Science and Environment Technology



Seminar Proceeding

March 3rd - 4th, 2017

Co-Sponsored



Organized by

Department of Chemistry

Sri Aurobindo College

University of Delhi, Malviya Nagar

New Delhi-110017

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



About the College

Sri Aurobindo College is a constituent college of the University of Delhi, established in the year 1972, after the name of famous and a multifaceted nationalist, Sri Aurobindo Ghosh. The college is located near Malviya Nagar metro station (200m) in South Delhi. Following in the footsteps of its namesake, the college is renowned for its faculty which is wholeheartedly engaged in the task of nation building by ensuring that its students are equipped with cutting-edge skills. Keeping in view the challenges of Indian education system, the college has been running various courses in Sciences, Humanities and Commerce with a capacity of approximately 3500 students.



SHREE KALA PRAKASHAN

42/43, U.B. Jawahar Nagar, Delhi - 110007

Mobile: 09868462459

E-mail: skp.1234561@gmail.com



[Handwritten Signature]

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



SEMINAR PROCEEDING

National Seminar

on

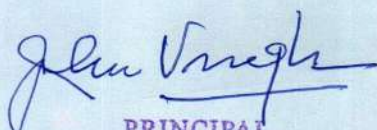
*“RECENT INNOVATIONS IN CHEMICAL
SCIENCE AND ENVIRONMENT
TECHNOLOGY”*

3rd-4th March, 2017

Organized By



Department of Chemistry
Sri Aurobindo College
University of Delhi, Malviya Nagar,
New Delhi-110017


PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007

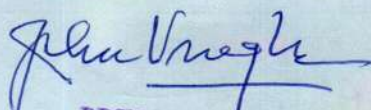


OP15 Bromination of Nucleosides by Sodium Monobromoisocyanurate (SMBI)

Jyotirmoy Maity,^{#,2} Roger Stromberg² and Ashok K Prasad[#]

[#]Bioorganic Laboratory, Department of Chemistry, University of Delhi, Delhi, India; ²Department of Biosciences and Nutrition, Karolinska Institute, Stockholm, Sweden
Email: jyotirmoy.maity@yahoo.com

A significant class of halogenated nucleosides is bromonucleosides, containing a bromine atom at the C-5 position of the pyrimidine nucleosides and C-8 position of purine nucleosides. Bromopyrimidine nucleosides, such as 5-bromo-2'-deoxyuridine, 5-bromouridine, 5-bromouridine-5'-triphosphate and nucleotides containing 5-bromouridine unit have shown their potency as drug molecules. Bromopurine nucleosides were used as indispensable precursors for the synthesis of nucleosides with fluorescent property. We have set up an efficient protocol for the synthesis of bromonucleosides using sodium monobromoisocyanurate (SMBI) in a very simplistic way. We performed all the reactions at room temperature using aqueous solvent mixtures. Purine nucleosides were brominated without use of any catalyst, bromination of pyrimidine nucleosides required sodium azide as catalyst. Unprotected natural nucleosides and miscellaneous alkyl, silyl or trityl-protected nucleosides were brominated efficiently by using SMI. First we performed our reactions with milligram scale and later we scaled up the reactions successfully to gram scale with unaffected yields. Detailed reaction conditions and work up procedure will be described in the presentation.



PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



Facile Access to Bromonucleosides Using Sodium Monobromoisocyanurate (SMBI)

UNIT 1.39

Jyotirmoy Maity,^{1,2} Smriti Srivastava,² Yogesh S. Sanghvi,³ Ashok K. Prasad,² and Roger Stromberg¹

¹Department of Biosciences and Nutrition, Karolinska Institutet, Novum, Sweden

²Bioorganic Laboratory, Department of Chemistry, University of Delhi, Delhi, India

³Rasayan Inc., Encinitas, California

Bromonucleosides constitute a significant class of molecules and are well known for their biological activity. 5-Bromouridine, 5-bromo-2'-deoxyuridine, 5-bromouridine-5'-triphosphate, and nucleotides containing 5-bromouridine have been tested and used for numerous biological studies. 8-Bromopurine nucleosides have been used as essential precursors for the synthesis of nucleosides with fluorescent properties. This unit describes protocols for the synthesis of bromonucleosides using sodium monobromoisocyanurate (SMBI) in a straightforward way. Reactions are carried out at room temperature, and aqueous solvent mixtures are used to dissolve the nucleosides. Sodium azide is used as catalyst for the bromination of pyrimidine nucleosides, and no catalyst is necessary for the bromination of purine nucleosides. Unprotected 2'-deoxy pyrimidine and 2'-deoxy purine nucleosides are treated with SMI to afford C-5 bromo pyrimidine and C-8 bromo purine nucleosides, respectively. This methodology has been found to be efficient for the synthesis of bromonucleosides on gram scale with consistently high yields. © 2017 by John Wiley & Sons, Inc.

Keywords: sodium monobromoisocyanurate • SMI • bromination • bromonucleosides

How to cite this article:

Maity, J., Srivastava, S., Sanghvi, Y.S., Prasad, A.K., and Stromberg, R. 2017. Facile access to bromonucleosides using sodium monobromoisocyanurate (SMI). *Curr. Protoc. Nucleic Acid Chem.* 68:1.39.1-1.39.9.
doi: 10.1002/cpnc.24

INTRODUCTION

Bromonucleosides represent an important class of nucleosides due to their prominent biological activity. 5-Bromo-2'-deoxyuridine is a structural analogue of thymidine and well known for its antiviral activity through incorporation into the DNA of replicating cells (Szybalski, 1974). Radiolabeled 5-halo-nucleoside analogues have shown potential in diagnostic oncology (Mercer et al., 1989). Bromonucleosides have been used widely as precursor molecules for the introduction of structural and functional variation into purine and pyrimidine nucleoside analogues (Agrofoglio et al., 2003). Fluorescently labeled nucleosides with high prospective in the field of molecular biology were synthesized using 8-bromopurine nucleosides as key intermediates (Amann and Wagenknecht, 2002; Clima and Bannwarth, 2008).

Literature procedures inform about various methodologies for the bromination of pyrimidine moieties. Reaction of pyrimidine nucleosides with Br₂/water (Fukuhara and Visser,

Synthesis of
Modified
Nucleosides

1.39.1

Supplement 68



Current Protocols in Nucleic Acid Chemistry 1.39.1-1.39.9, March 2017
Published online March 2017 in Wiley Online Library (wileyonlinelibrary.com).
doi: 10.1002/cpnc.24
Copyright © 2017 John Wiley & Sons, Inc.

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007

John Sanghvi



Page 51 of 56

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272
ISSN 2349-1906

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,
अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय
'अभ्युदय'
ई-112, श्रीकृष्णपुरी
पटना-800001 (बिहार)
मोबाइल : 09835063713/08507473724
ई-मेल : sahiyayatra@gmail.com
वेब साईट : http://www.sahiyayatra.com

मूल्य : ₹ 45

शुल्क दर :	एक वर्ष (4 अंक)	300
	तीन वर्ष (12 अंक)	750
	(डाक खर्च सहित)	
	संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	1100
	आजीवन सदस्यता	11,000
	विदेश के लिए	60 डॉलर (3 वर्ष)

शुल्क 'साहित्य यात्रा' के नाम पर भेजें।

'साहित्य यात्रा' त्रैमासिक डॉ॰ कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा 'अभ्युदय'
ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स, पटना
से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : डॉ॰ कलानाथ मिश्र।

साहित्य यात्रा/जुलाई-दिसम्बर, 2016 ॥ 04 ॥

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



अनुक्रम

संपादकीय	07-08
डॉ. कलानाथ मिश्र	
आपके पत्र	09-10
आलेख	
रामदरश मिश्र	
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और कथालोचन	11-20
संस्मरण	
विजय निकोर	
मेरी प्रिय अमृता प्रीतम जी	21-29
आलेख	
प्रो० (डॉ०) गणेश प्रसाद	
हिन्दी कविता में रहस्यवाद	30-37
डॉ. श्रुति आनंद सिंह	
स्त्री कविता विमर्शों से परे	38-45
डॉ. राजहंस कुमार	
हिन्दी कविता में पर्यावरण बोध	46-52
डॉ. प्रभात शर्मा	
हिन्दी कविता में आपदा विमर्श	53-65
जीतेन्द्र कुमार मीना	
स्त्री स्वातंत्र्य का प्रश्न और ध्रुवस्वामिनी	66-72
ज्योत्स्ना कुमारी	
'मोहन राकेश की डायरी' युग और परिवेश का दस्तावेज	73-79
अजीत कुमार	
हिन्दी गीत की विकास-यात्रा	80-88
आशुतोष शुक्ल	
'राग दरबारी' की भाषा में लैंगिक पक्षपात	89-100
समीक्षा	
डॉ. आशा मेहता	
बिरले दोस्त कबीर के	101-104

साहित्य यात्रा/जुलाई-दिसम्बर, 2016 ॥ 05 ॥

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007

John D. Singh





शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

‘राग दरबारी’ की भाषा में लैंगिक पक्षपात

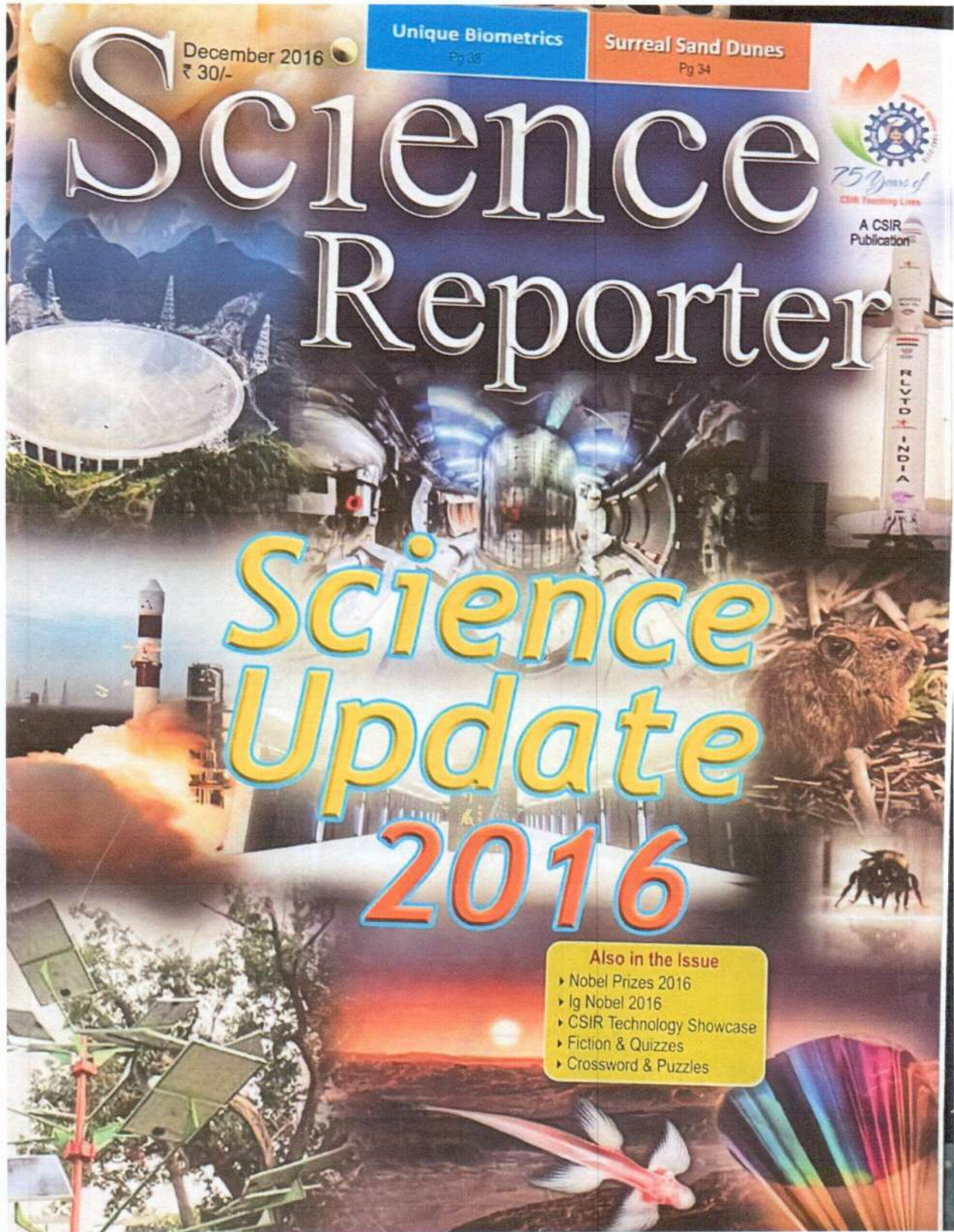
आशुतोष शुक्ल

नारी विमर्श को समाजवादी दृष्टि, ऐतिहासिक दृष्टि या मनोविश्लेषणवादी दृष्टि से परखा गया है किन्तु भाषा को केन्द्र में रखकर विचार करने से लैंगिक पक्षपात की पूरी परम्परा का विश्लेषण हो सकेगा। नारी की पीड़ा, उसकी कठिनाइयों एवं उसके जीवन को भाषा के जरिये विश्लेषित कर समाधानों की ओर बढ़ा जा सकता है।

‘राग दरबारी’ व्यंग्य की आधारभूमि पर विकसित होने वाला ऐसा रोचक उपन्यास है जिसने समाज की सच्चाई को बड़े बेबाक ढंग से उठाया है। इस उपन्यास में स्त्री और पुरुष के सम्बन्धों का बड़ी सूक्ष्मता से विश्लेषण किया गया है। लैंगिक पक्षपात को इस उपन्यास के केन्द्र के रूप में देखा जा सकता है। यह लैंगिक पक्षपात स्त्री और पुरुष के सत्ता समीकरण को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि समाज में बोली जाने वाली भाषा को भी नियंत्रित करता है। इस उपन्यास की भाषा हमें यह बतलाती है कि समाज में स्त्री की दशा इतनी निम्न है कि उसकी अनुगूँज भाषा की व्याकरणिक संरचना तक में सुनाई देती है।

किसी की भी भाषा उसकी आशा, आकांक्षाओं का पिटारा होती है। स्त्री की भाषा लैंगिक पक्षपात का सबसे जीवन्त एवं प्रामाणिक दस्तावेज है। शब्दों से लेकर उनके अर्थ, अभिप्राय, भाव-भंगिमाओं के साथ-साथ बलाघात, अनुतान तक पूर्वनिर्धारित एवं पुरुषनिर्मित होते हैं।

आकर्षण, भाषा का अनिवार्य गुण है। वक्ता और श्रोता इसके माध्यम से ही



December 2016
₹ 30/-

Unique Biometrics
Pg 38

Surreal Sand Dunes
Pg 34

75 Years of
CSIR Teaching Lines
A CSIR
Publication

Science Update 2016

- Also in the Issue**
- ▶ Nobel Prizes 2016
 - ▶ Ig Nobel 2016
 - ▶ CSIR Technology Showcase
 - ▶ Fiction & Quizzes
 - ▶ Crossword & Puzzles

PRINCIPAL
ST. STEPHEN'S COLLEGE
DELHI-110007



NOBEL PRIZES 2016: CHEMISTRY

World's Smallest Machine Makers Bag Nobel Prize

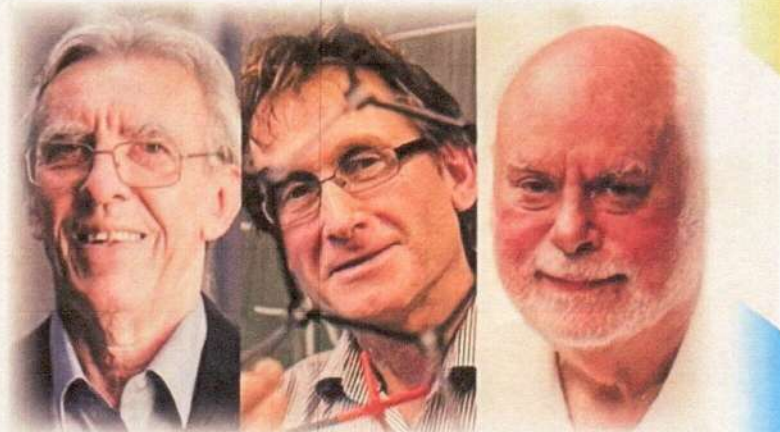
A. K. BAKSHI &
PRIYANKA THAKRAL

THE 2016 Chemistry Nobel Prize has gone to Jean-Pierre Sauvage, J. Fraser Stoddart and Bernard Feringa "for the design and synthesis of molecular machines". The laureates will share the eight million kronor (\$930,000) prize, which will be handed out at a ceremony on December 10, the death anniversary of prize founder Alfred Nobel (died in 1896).

To appreciate this field of work, one needs to understand what are molecular machines? The terminology "Molecular Machines" comprises of two words - MOLECULAR and MACHINES. Different types of machines are a part of our daily life (for instance motor bike, blender, air conditioner, etc.) as they help us perform a variety of tasks that fall beyond our capacities. Specifically, the term machine refers to an equipment with moving parts that does work when supplied energy. The other term is molecular which is indicative of microscale dimensions i.e., relating to molecules.

Interestingly, the trio designed the world's smallest machine not by miniaturizing pistons or gears (commonly known parts of a machine) but by scaling them down to the dimensions of a molecule. This was fueled by breakthroughs in synthetic organic chemistry techniques and advanced instrumentation methods.

The modus operandi of this approach has been the mimicry of the macroscopic world at the molecular level with the attempt to engineer tiny moving machines about 1/1000th the width of a strand of human hair that can perform tasks when energy is added. This research frontier has intrigued scientists for many years. In fact, the miniaturization idea was triggered by Nobel laureate Richard



Jean Pierre Sauvage

Bernard Feringa

James Fraser Stoddart

Feynman's famous lecture entitled "Plenty of Room at the Bottom" in December 1959. Richard Feynman talked about the potential for construction at the smallest level or atomic scales.

So, one can define a molecular machine as an intelligent congregation of a distinct number of molecular components (building blocks) that are framed to perform machine-like movements (useful work as output) as a result of some befitting external stimulation (input - constructive interaction of individual molecules at the molecule scale of length).

A convenient unit of measurement at the molecular level is the nanometer scale. Hence, these molecular machines fall into the league of nano-machines. The working of these molecular machines depends on the inter- and intra-molecular interactions. Before understanding how appropriate interactions between molecules result in useful work, let us peep into the natural molecular machines.

Natural Molecular Machines

The natural molecular machines are nothing but complex biomolecules -

proteins, nucleic acids, and carbohydrates that consume energy in order to perform specific functions. The underlying activities of a living cell are a result of collaborative action of all these machines. So, one can say that the human body is a macro-machine composed of numerous micro-machines (molecular machines).

To understand the functioning of these molecular machines, one needs to identify the different moving parts and understand how they act together. A seamless coordinated integration of structural, dynamical and functional data from experiments and theory has brought in such understanding. With increase in scientific understanding of these numerous tiny natural machines, we are now in a position to synthesize such machines from scratch by imitating nature.

The majority of natural molecular machines are protein based as nature deploys proteins to perform various cellular tasks, from moving cargo to catalyzing reactions. With powerful crystallographic techniques available, protein structures are clearer than